सत्संग परम संत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(दिनांक 22.05.2016, अलवर)

मनुष्य पाँच तत्वों से बना है। जल अग्नि, पृथ्वी, वायु, और आकाश। लेकिन छठा तत्व भी है जिसको बोलते हैं Super most Element और वो Super most Element क्या है? वो है प्रेम। और मालिक उस Super most Element का बना है। भगवान का कोई रूप नही है। ''नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे'' लेकिन वो किस चीज से बना हुआ है? वो प्रेम से बना हुआ है। मालिक का रूप क्या है? मालिक का रूप है प्रेम। और वो कहाँ हैं? वो हमारे अंदर है, उसको जाग्रित करना होता है। प्रेम वो नही जो हम अपने बच्चें से करते हैं, उसको मोह बोलते हैं। प्रेम का नाम है निःस्वार्थ, निस्काम। आप संसार के किसी भी मनुष्य के साथ निःस्वार्थ प्रेम करें। चाहे वो आपके रिलेशन में कोई भी हो, वो है मालिक का रूप। अंग्रेजी में कहते हैं–love is god & god is love. '' नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे। हम सब उसी मालिक के रूप हैं। उस मालिक को कोई रूप नही है। अगर आप कहते हैं– हे भगवान मुझको दर्शन दो। कौन भगवान दर्शन देगा आपको। किस रूप में दर्शन देगा? जब उसका कोई रूप ही नही है। अगर कोई कहता हे कि मैंने भगवान के दर्शन किए हैं। तो वो महा झूठा है, दुनिया का सबसे बडा झूठा वही है। जिस चीज का कोई रूप है ही नही, उस चीज का दर्शन कैसे करेगा वो? आप रोज आरती में गाते हैं–''नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे। जब आप खुद बोलते हैं ''नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे। फिर वो किस रूप में आपको दर्शन देगा? उसका कोई रूप है ही नही। वो महसूस करने की चीज है। आप God को महसूस कर सकते हैं। कैसे महसूस कर सकते हैं? शुरू अपने आप से ही करिए पहले। ये आँखें किसने बनाई? जिनसे मैं देख रहा हूँ। यही है God को महसूस करना। मैं सुन रहा हूँ, मैं साँस ले रहा हूँ। साँस के बिना मैं एक मिनट भी जिंदा नही रह सकता हूँ। कौन साँस ले रहा है? ये हवा कहाँ से आ रही है। वो ही है मालिक का रूप। आप सोच रहें हैं मालिक कहीं आसमान में लटक रहा है। मालिक आसमान में नही लटक रहा है। सब आपके अंदर है। आप कोई भी चीज देख लीजिए, वही है भगवान का रूप। अग्नि में जो जलन है, वही मालिक का रूप है। जल में जो शीतलता है, वही मालिक का रूप है। तुम्हारी आँखों के सामने जो भी है वही है मालिक का रूप। पहचानो उसको, जिसने पहचान लिया, वो तर गया। फिर वो इस संसार का बन्दा नही रहता है। समझो मालिक का रूप क्या है? मालिक का रूप है प्रेम। सबसे प्रेम करो। जब आप सबसे प्रेम करोगे, तो फिर आपको क्या मिलेगा? अंग्रेजी में कहते हैं– Every action has equal & opposite reaction. जब आप बॉल को फेंकते हो, तो बॉल वापिस आपके पास ही आती है। इसी तरह हरेक काम जो भी आप करते हो, वो वापिस आपके पास ही आता है। जब आप किसी को गाली देते हो, तो वापिस वो गाली आपके पास ही आती है। इसी तरह जब आप किसी से प्रेम करो, तो वो भी आपसे प्रेम ही करेगा। जितना आप प्रेम बाँटोगे, उतना ही आपको प्रेम मिलेगा। आप जितना प्रेम करो वो सारा प्रेम सिमटकर आपके पास ही आएगा। इसका उल्टा आप नफरत करो, आपसे सब नफरत करेंगे। लेकिन नफरत मालिक का रूप नही है। मालिक का रूप है प्रेम। प्रेम बाँटो और प्रेम मिलेगा। हर किसी का प्रेम जाग्रित नही होता है। जिस पर गुरू की दया होती है, उसी का प्रेम जाग्रित होता है। प्रेम जाग्रित सिर्फ सतगुरू ही करता है। एक बार आपके अंदर प्रेम जाग्रित हो जाए। फिर आप संसार के बंदे नही रहते। फिर आप अलग हैं संसार से। फिर आप क्या हैं? फिर आप मालिक के बंदे हैं। क्यों? मालिक प्रेम का ही बना हुआ है और जब आप भी प्रेम के बन गए। फिर प्रेम–प्रेम आपस में मिलकर प्रेम ही बन गया, और प्रेम ही मालिक का रूप है। फिर आप भी मालिक ही बन गए। जिस तत्व का मालिक बना हुआ है, उसी तत्व के आप भी बन गए। तो इस संसार में जो है प्रेम ही प्रेम है। लेकिन हमारी बदकिस्मती यह है कि हम

इस बात को समझ नही पाते, और हमारे दिल में नफरत पैदा हो जाती है। परम दयाल जी महाराज कहते थे, जो नफरत करता है, वो अपने कर्म बनाता है। आपको मालिक ने बनाया प्रेम करने के लिए। आपका स्वभाव है प्रेम करना, लेकिन जब आप उसके विरूद्ध करते हो, तो फिर आपका कर्म बन गया। फिर तो आपको उसका भुगतान करना ही पडेगा।

ये जो जन्म मरण का खेल है, ये हमारे हाथ में नही है। ये मालिक ने अपने हाथ में रखा है। Top Secret जो है इस संसार में वो यही है कि आदमी इस संसार में क्यों जन्मता है और क्यों मरता है। आज तक जितने भी ऋषि मुनि, तपस्वी और संतों ने अपने अनुभव से यही बताया है कि ये सब कर्मों का खेल है। पता नही हमने कितने जन्म लिए हैं और कितनी बार मरे हैं। हमारे शास्त्र बताते हैं कि ब्रह्मा की एक साल बीत जाने के बाद महा प्रलय आता है। ब्रह्मा का एक दिन हे 42 लाख x 2 लाख साल। फिर से नई सृष्टि की रचना होती है। लेकिन इसमें हमें खुश होने की बात नही है। चलो अच्छा है हमारे सारे कर्म खत्म हो गए। कर्म खत्म नही होते, हमारे कर्मों की File हमारे साथ–2 चलती है। और उस File में हमारे सारे जन्मों का लेखा–जोका लिखा रहता है। जब महाप्रलय के बाद नई सृष्टि बनती है, तो फिर से सारी फाइलें खुल जाती हैं। आप खुश मत होना कि हमारे सारे पाप खत्म हो जाएँगें। ऐसा नही होगा। हम जहाँ तक चले हैं, उससे आगे चलना है हमको। फिर नया ब्रह्मा आएगा, वो फिर से सबकी फाईलें खोलेगा। वो देखेगा इसने ये कर्म किया है, इसको साँप का जन्म दे दो। उसको मक्खी का जन्म दे दो। हमारे जो कर्म हैं वो कभी खत्म नही होने वाले हैं। लेकिन मालिक हमको एक मौका देता है। ये मनुष्य जन्म एक मौका है। मालिक कहता है अपने कर्मों की टोकरी खाली करो। जिस दिन हमारे कर्मों की टोकरी खाली हो गई, हमारा एक भी कर्म नही रह गया। उस दिन हमारी छुटटी, हमको फिर से जन्म नही लेना है। अगर हमारी टोकरी में एक भी कर्म बाकी रह गया। फिर से वही संसार, वही पापड बेलना, वही जन्म मरण का दुख। हमारे गुरू जी कहते थे–One mark less, one year more, परीक्षा में पास होने के लिए हमको 33 Marks लाने है, अगर हमारे 32 Marks आ गए। एक Marks रह गया ना। फिर से वही स्कूल, वही Teacher वही किताबें। इसी तरह हमारी टोकरी में एक भी कर्म बाकी रह गया।फिर से आपको गर्भ में आना है। फिर से आपको संसार के रोग झेलने हैं। फिर से इस संसार की कीचड़ (काम, क्रोध, मोह, लोभ, राग, द्वेष, जायदाद के ऊपर काट मार) झेलनी है। लेकिन इस संसार में हमको मजा आ गया है। हम नही जाना चाहते इस संसार को छोडकर। एक बार नारद मुनि जी गए पृथ्वी लोक में, लेकिन वहाँ कोई भी राजी नही हुआ स्वर्ग लोक में जाने के लिए। फिर अंत में नारद जी एक सूअर से कहते हैं स्वर्ग लोक चलेगा? सूअर बोला वहाँ गंदी नालियाँ हैं? नारद जी ने कहा वहाँ गंदी नालियाँ नही हैं। तो सूअर ने कहा मैं नही जाता स्वग लोक में। यही हाल हमारा है, हम गंदी नालियों में पडे हैं। हमें स्वर्ग जाने की इच्छा है ही नही। क्यों? क्योंकि हमने संसार को पहचाना ही नही। ये ससांर क्या है? हम इस संसार में बडी–2 कोठियों, बडे–2 बंगले, बडी–2 गाडियाँ, इस संसार की चमक–दमक, देखकर खो जाते हैं। हमें कोई सुध बुध नही रहती, कि इसके अलावा भी कुछ और है। दो चीज हैं एक नाशवान चीज और दूसरी नाशवान नही होने वाली चीज। ये जो संसार आप देख रहें हैं बडे–2 मॉल, बडी–2 कारें, बडे–2 बंगले, ये सब नाशवान कैटेगरी में आते हैं। ये सब नष्ट होने वाला है। जिस दिन महाप्रलय आएगा, उस दिन सब खत्म हो जाएगा। महा प्रलय का इंतजार क्यों करें हम? छोटे–2 प्रलय तो अभी आ जाते हैं। आप काठमाण्डु शहर देखो, एक भूकंप के झटके से सारे मकान मिटटी में मिल गए। जापान में सुनामी आ गई।बडे–2 मकान खिलौनों की तरह बह गए। उनके लिए महाप्रलय वही है। तो फिर हम महा प्रलय का इंतजार क्यों करें?

एक आदमी किसी महात्मा के पास गया और महात्मा से बोला मैं भगवान का नाम लेना चाहता हूँ। भगवान का नाम लेने का सही समय कब है? महात्मा बोले–जिस दिन तुम्हारी मृत्यु होगी, अपनी

मृत्यु से एक दिन पहले भगवान का नाम ले लेना। अब वो सोच में डूब गया, कब मेरी मृत्यु होगी और कब मैं भगवान का नाम लूँगा। महात्मा समझ गया, महात्मा ने उस आदमी को कहा अपना हाथ दिखाओ। ओह! तेरी तो चार दिन बाद मृत्यु है। वो रोता हुआ घर गया, और चार दिन बाद महात्मा के पास वापिस पहुँचा और महात्मा जी आपने कहा था कि कि मैं चार दिन बाद मरूँगा, लेकिन मैं तो मरा ही नही। महात्मा ने पूछा चार दिन क्या किया? उसने कहा मैंने भगवान का नाम लिया। महात्मा मुस्कुराये, मैं भी तो यही चाहता था कि तुम भगवान का नाम लो। तुम भी मन में यही सोचो कल मेरी मृत्यु होने वाली है, और आज भगवान का नाम ले लो।

राजा परीक्षित को श्राप दिया कि तुम्हारी सात दिन बाद मृत्यु हो जाएगी। कोई संत था, वो तपस्या कर रहा था। तो राजा परीक्षित ने उसके गले में सांप डाल दिया था। जब संत की आँख खुली तो उसको क्रोध आ गया और उसने श्राप दे दिया कि जिसने मेरे गले में सांप डाला है, उसकी सात दिन बाद मृत्यु होने वाली है। राजा परीक्षित ने सभा बुलाई, किसी ज्ञानी ने उनको सलाह दी कि आप एक Air Tight काँच का महल बनवा लो, और किसी संत महात्मा को बुलाओ और सत्संग करवाओ। उसने सीसे का एक महल बनवाया जिसमें एक चींटी भी अंदर नही जा सकती थी। उसने वहाँ विद्वान बिठाए और उनसे कहा मुझसे 7 दिन का सत्संग दे दो। जब सत्संग सुनते–2 सात दिन हो गए और उसकी मृत्यु का समय नजदीक आ गया। तो राजा परीक्षित कहता है अब मुझे मृत्यु का भय नही है। अभी आ जाए मृत्यु और मुझे ले जाए। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि 7 दिन उसको सतसंग मिला और सत्संग से उसको ज्ञान मिला कि ये संसार नाशवान है। अरे तू नाशवान चीज को क्यों पकड कर बैठा हे। तू उस चीज को पकड जो तेरे साथ रहेगी हमेशा। वो कौन है? वो है सतगुरू। सतगुरू को पकड़, वो हमेशा साथ रहेगा। तेरी मृत्यु कभी नही होगी, क्योंकि तू हमेशा सतगुरू के अंदर रहेगा। ये शरीर नाशवान है, जाने दो इसको, दूसरा शरीर मिल जाएगा। तू कहीं नही जाएगा, तू हमेशा रहेगां यही ज्ञान मिल गया उसको सत्संग से।इसलिए सत्संग लागी रहो मेरे भाई, तेरी बिगडी बात बन जायी।

राधास्वामी।।